Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION
RESEARCH JOURNEY
INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
February - 2019 SPECIAL ISSUE- 142

Recent Trends in Language, Literature, Social Science & Commerce

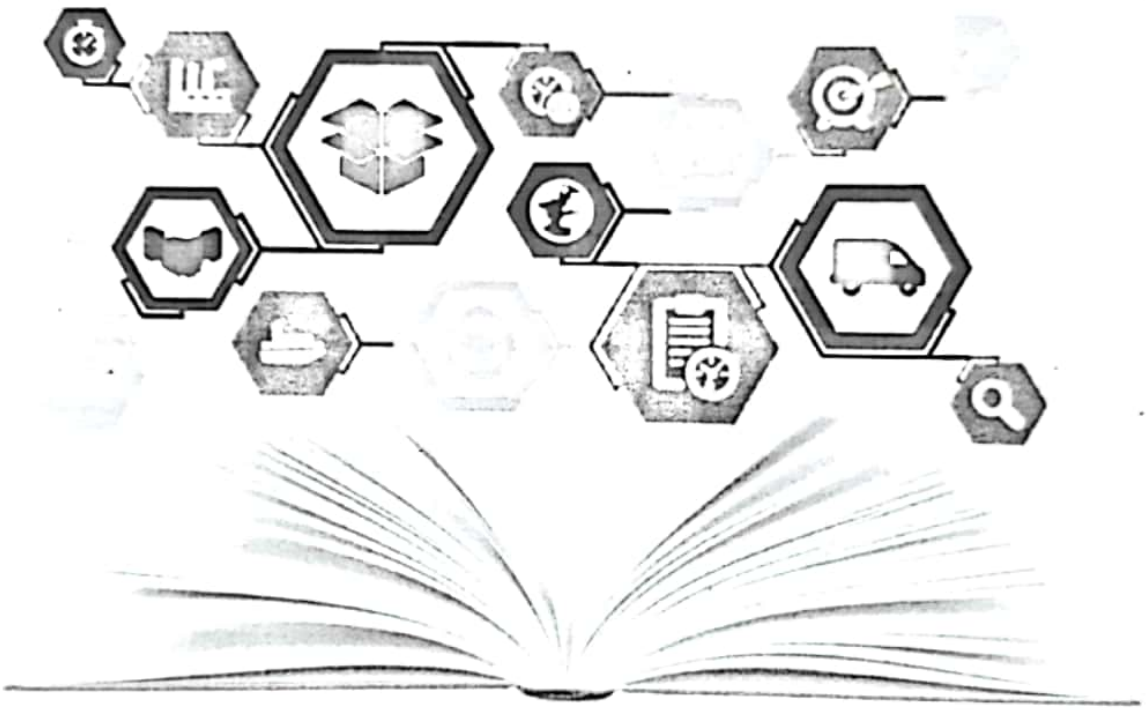

Guest Editor :
Dr. Subhash Nikam
Principal,
Mahatma Gandhi Vidyamandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray Arts,
Science & Commerce College,
Nimgaon, Tal. Malegaon,
Dist. Nashik [M.S.] India

Executive Editor of the issue :
Dr. Arun Patil
Dr. Kalyan Kokane

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	The Impact of Mall, Call and Tall in Teaching of English Language and Literature in Rural Areas	Dr. Umesh Patil	03
2	New and Effective Trends and Techniques Used for Teaching and Learning English Language	Dr. Deepak Chaudhari	06
3	Eco-Cultural Criticism in Literary Study: A General Perspective	Ms. Deepanjali Borse	08
4	A Study of Element of Love and Beauty in the Poems of Dr. Vaibhav Sabnis	Deepak Deore	11
5	Soliloquies and Asides in Mahesh Dattani's Stage Plays	Hemantkumar Patil	14
6	The Role of Recent Trends in Shaping Modern English Literature	Mr. Kamalakar Gaikwad	20
7	Postmodern Sensibilities in K. D. Singh's Ghazals	Prof. Mukund Bhandari	26
8	State Level Seminar Innovative Trends in English Language Teaching	Prof. Sarbjit Cheema	29
9	New Wave in Dalit Literature Reflected in Narendra Jadhav's Outcaste : A Memoir	Dr. Sidhartha Sawant	32
10	Trends in India's Population Growth Challenges & Opportunities	Prakash Kumar	36
11	Business Research	Prof. Uday Teke	40
12	Emerging Trends in English Literature : Post 1950	Swapnil Alhat	43
13	The Necessity of Incorporating Culture in to a Foreign Language Classroom	Dr. Vrushali Desai	47
14	संस्कृति एवं परपरा : संकल्पना एवं स्वरूप	प्रा.बाबासाहेब शेंडगे	50
15	मुक्तककार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल	प्रा. राजाराम शेवाळे	56
16	आधुनिक नारी और सामाजिक चुनौतीयाँ	प्रा. आर. एन. वाकळे	59
17	जनसंचार माध्यमो में हिंदी भाषा की स्थिती	प्रा. कैलास बच्छाव	61
18	जागतिकीकरण : मराठी भाषा आणि साहित्य	डॉ. अरुण पाटील	64
19	साहित्यातील एक नवा रुपबंध : अलक	डॉ.प्रमोद आंबेकर	68
20	मराठी साहित्यातील नवे प्रवाह	डॉ. सपना सोनवणे	74
21	भारतातील महिला साक्षमीकरण	ज्योत्स्ना गायकवाड	78
22	इतिहास लेखनाविषयीचा सबाल्टर्न दृष्टीकोन	प्रा.जे.डी.पगार	81
23	भारतीय बँक व्यवसायातील आधुनिक तंत्रज्ञान	देवानंद मंडधरे	84
24	वर्तनवाद : राज्यशास्त्र विषयातील एक नवक्रांती	प्रा. एन.ए. पाटील	90

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor -(SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 142- Recent Trends In Language, Literature, Social Science & Commerce
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

जनसंचार माध्यमो में हिंदी भाषा की स्थिति

प्रा. कैलास के. बच्छाव
हिंदी विभागाध्यक्ष
एम.पी.एच. महिला महाविद्यालय,
मालेगाव कैम्प, जिला नाशिक
मो. ९४२१४४३६७५

विगत दो दशको से समाज के हर क्षेत्र में बडी तीव्र गती से परिवर्तन आया है । विश्व के अधिकांश देशो मे सामाजिक शैक्षिक, औद्योगिक क्षेत्र के साथ तकनिकी क्षेत्र में तो विशेष परिवर्तन हो रहा है । इस परिवर्तन ने देश और सीमा के बंधन को तोडकर विश्व को एक ग्राम में सीमटकर रख दिया है । विश्व के अनेक देशो में यातायात की सुविधा अधिक सजता से उपलब्ध होने से अनेक लोग रोजगार, व्यापार, नोकरी, पर्यटन आदि क्षेत्रो या विभिन्न देशो मे जाते है वे लोग अपनी संस्कृति के साथ अपनी भाषा भी ले जाते है । इसलिए भाषाएँ भी देश और सीमा के बंधन तोडकर दुसरे देशो तक पहुँच रही है । और इस स्थिति को अधिक लाभदायक, सुखमय बनाने में जनसंचार माध्यमों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है ।

भाषा जनसंचार के लिए एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है । भाषा के बिना जनसंचार माध्यमों के अभिव्यक्ति की कल्पना भी नही की जा सकती । जनसंचार और संप्रेषण के लिए भाषा का योगदान महत्त्वपूर्ण है जनसंचार और भाषा का अंत: संबंध है । इसी जनसंचार माध्यमों के दृश्य एवं द्रव्य माध्यमों द्वारा जनमानस में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है । विविध संचार माध्यमो एवं हिंदी भाषा का निकटतम संबंध है । संचार माध्यमों में भाषा एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है । जनसंचार अर्थात जन के हृदयतक, पहुँचाने में भाषा बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम है, सामान्यता विविध संचार माध्यमो के प्रमुख उसी भाषा को प्रमुखता से अपने संचार माध्यमो की भाषा स्वीकार करते है जिसे उस देश के क्षेत्र के अधिकांश लोग परिचित हो, समझते हो । और इस कसोटीपर आज भारत देश की हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसे देश का एक बहुत बडा वर्ग समझता है उसे व्यवहार की भाषा में स्वीकार करता है । इसी जनसंचार माध्यमों के दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों द्वारा जनमानस में हिंदी का प्रचार और प्रसार हो रहा है ।

जन सामान्य तक कोई संदेश पहुँचाना हो तो प्राचीन काल के राजा महाराजाओ से वर्तमान काल की शासन व्यवस्था तक जनसंचार के विविध माध्यमों का प्रयोग जनमानस की भाषा में हो रहा है, भारत में परंपरागत मनोरजनात्मक जनसंचार माध्यमों में कठपुतली लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य रासलीला, किर्तन, भारुड, तमाशा आदि है । तो आधुनिक काल में रेडियो, ऑडियो, सिनेमा, टेलिविजन, नये इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यमों मे कॉम्प्युटर, इंटरनेट, व्हॉटसॲप, फेसबूक आदि माध्यम है । तो प्रिंट मिडिया के माध्यमो में समाचार पत्र पोस्टर, किताबे, साप्ताहिक, मासिक, जर्नलस आदि माध्यम है ।

आज का युग वैश्विकरण का युग है । इस वैश्विकरण के युग में विश्व में बाजारवाद एवं व्यावसायिक प्रवृत्ती अनेक देशो में पनपती जा रही है । इस विस्तृत बाजारवाद ने हिंदी भाषा को प्रमुख भाषा के रूप में स्वीकार किया है ।

बीसवी शती के अंतीम दशक से हिंदी भाषा का आंतरराष्ट्रीय महत्त्व बहुत तेजी से बढ रहा है । हिंदी भाषा विज्ञापन, सिनेमा, इंटरनेट, वेब आदी संचार माध्यमोद्वारा बाजारकी प्रमुख भाषा के रुप प्रगती पथपर है ।

Scanned with CamScanner

२१ वी शती के बाजारवाद की व्यावसायिकता ने हिंदी भाषा को प्रमुखता से स्वीकार किया है । विविध जनसंचार माध्यमोद्वारा हिंदी भाषा को गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ है । जनसंचार के सभी माध्यमो मे हिंदी भाषा की स्थिती वैश्विक सार पर मजबूत बनती जा रही है ।

जनसंचार के सबसे लोकप्रिय एवं प्रभावी माध्यमों में टेलिविजन एवं सिनेमा है । इन दृकश्राव्य माध्यमो द्वारा समाज के मध्यम एवं गरीब वर्ग तक अनेक मनोरंजन पुर्ण कार्यक्रम के साथ महत्त्वपूर्ण विषयोंकी जानकरी प्राप्त होती है । आज भारत देश के कुछ लोक हिंदी बोल नही पाते, लिख नही पाते, किंतु विज्ञापन, टेलिविजन, रेडियो, सिनेमा आदि माध्यमों द्वारा प्रसारित विविध विषयों की जानकारी सूचनाएँ उन्हे प्राप्त होती है । टेलिविजन तो अल्पावधि में ही हिंदी भाषा को सामान्य जनतक पहुँचने वाला सबसे लोकप्रिय एवं सरल माध्यम बन गया है । टेलिविजन इस माध्यम का प्रतिदिन महत्त्व बढ रहा है । टेलिविजन पर प्रसारित कृषी, मनोरंजन, शिक्षा, अध्यात्म, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, खेल आदि किसी भी विषय के कार्यक्रम हो देशभर में उसे देखे जाते है । विश्व के अनेक देशों में उसका प्रसारण होता है । इतनाही नही तो कुछ वर्षो से दक्षिण भारतीय प्रादेशिक सिनेमाओं का हिंदी भाषा में भाषांतर करके उसे दिखाया जाता है । जो समाज में अधिक लोकप्रिय मनोरंजन का साधन हो गया है । इसका अतिरिक्त लाभ यह है की, अधिकतर दक्षिणोत्तर व्यक्ती जब ऐसे सिनेमाओं को देखते है तो उन्हे दक्षिणात्य प्रदेश की वेशभूषा उनके रीतिरिवाज, त्यौहार, उत्सव, सामाजिक, धार्मिक, परिवेश के साथ, उनकी संस्कृति से वे परिचित होते है । जिससे अनेक दक्षिणोत्तर लोक पर्यटन व्यापार एवं अन्य कारणो से दक्षिण में जाते है तो उन्हे वहाँ की भौगोलिक ऐतिहासिक स्थानों का ज्ञान सिनेमा से जो प्राप्त होता है । तो वहाँ के लोगो से विचार– विनिमय करते समय राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित होती है । इस टेलिविजन सिनेमा जैसे जनसंचार माध्यम से देश में साामजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित होती है ।

आज अधिकतर फिल्मों ने तो वैश्विक स्थान प्राप्त किया है । आज अनेक हिंदी फिल्मों में भारत देश के साथ विश्व के युरोप, अमेरिका, आफ्रीका, अशियायी जैसे अनेक देशों का चित्रण हो रहा है । भारत देश के लोग घर बैठकर इन हिंदी फिल्मों द्वारा विदेश के अनेक ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, स्थलों का दर्शन फिल्मों द्वारा करते है जिससे समाज का एक विशेष वर्ग उस देश का पर्यटन कर उन क्षेत्रों की जानकारी एवं आनंद प्राप्त करते है । उनके मन में पर्यटन करने की और विदेश के अनेक महत्त्वपूर्ण देशों को देखने की लालसा निर्माण होती है । जिससे पर्यटन क्षेत्र का विकास तो होता है किंतु इन संचार माध्यमों द्वारा दो देशों की संस्कृति निकट आती है । उनमें एकता अपनेपन की भावना विकसित होती है । इन संचार माध्यमो द्वारा अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है ।

हमारे देश ने, स्वातंत्र्योत्तर काल में जो हरितक्रांती, औद्योगिक क्रांती, सूचना एवं प्रसारण क्षेत्र में क्रांतो आदि क्षेत्रों में अपना एक विशेष स्थान प्राप्त किया है । और विश्व के अनेक देशों में अपना एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है । इस उपलब्धि एवं सफलता में अधिकतर योगदान जनसंचार माध्यमों का ही है । जनसंचार माध्यमो के समाचारपत्रों, रेडिओं, टेलिविजन, जर्नल्स, सिनेमा आदि माध्यमोद्वारा उन क्षेत्रों की प्रगती, उपलब्धि आदि की जानकारी प्राप्त होती है ।

मानव समाज में समाचार पत्र, जनसंचार का एक ऐसा प्रमुख माध्यम है जो सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सरल माध्यम है । जिससे सरकार की नीतियों, योजनाओं, शिक्षा, खेल, राजनीती, अध्यात्म, उत्पादन आदि

Scanned with CamScanner

क्षेत्रों की पहेलुओं जानकारी देहात के सामान्य से सामान्य व्यक्ती तक समय पर एवं कम मूल्य में पहुँचती है । यह जनसंचार के सभी माध्यमों में जानकारी एवं ज्ञान की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माध्यम है ।

भाषा की शुध्दता की दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर काल में कुछ वर्षोतक समाचार पत्रों की भाषा साहित्यिक एवं भाषिक दृष्टि से संपन्न रही किंतु विगत कुछ वर्षो से अधिकतर समाचार पत्रों की भाषा में विशेषत: हिंदी भाषा के समाचार पत्रों में ग्रामीण परिवेश के शब्द अँग्रेजी भाषा के शब्दो का प्रयोग अधिक मात्रा हो रहा है । जिसे कुछ विद्वान हिंदी की जगह हिंग्लिश नाम देते है । संचार माध्यमों में एक दुसरा माध्यम विज्ञापन है । विज्ञापन की भाषा का प्रभाव सामान्य जनता तक बहुत तेजी से पडता है । संचार माध्यमों के विज्ञापन का प्रयोग व्यावसायिक माध्यम के रुप में किया जाता है । इसका प्रमुख लक्ष्य अपने उत्पादन बेचने हेतु ग्राहकों को आकर्षित करना है । इसिलिए उत्पादन का विज्ञापन जनसंचार माध्यमों में प्रसारीत करने से पहले उस वर्ग का आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर को देखकर उस प्रकार की भाषा का प्रयोग विज्ञापन में किया जाता है । क्योंकि उपभोक्ता सबसे पहले विज्ञापन की भाषा को ही पढता है ।

वर्तमान काल में बहुउद्देशीय उपकरणों में कम्प्युटर का स्थान महत्त्वपूर्ण है । कम्प्युटर के माध्यम से हम इंटरनेट से जुडते है । इंटरनेट भी हिंदी भाषा को बढावा देने में पीछे नही है । इससे हिंदी भाषा के साथ अन्य विषयोंकी जानकारी हमें इंटरनेट की सुविधा से प्राप्त होती है । इंटरनेट पर समाचार पत्र पढा जाता है । आज कम्प्युटर में हिंदी सॉफ्टवेअर आ चुका है । जनसंचार माध्यम ने हिंदी के साहित्यिक स्वरुप की अपेक्षा प्रयोजनात्मक स्वरुप को अधिक स्वीकार किया है । क्योंकि हिंदी यह भाषा राजकाज की तो है किंतु उससे अधिक वह व्यावसायिक, व्यावहारिक जीवन की भाषा के रुप में गति के साथ आगे बढ रही है । आज के इस वैश्विकरुप के युग में अमेरिका युरोप, चीन, जैसे अनेक देशों को भारत एक अच्छा बाजार के रुप में दिखाई देता है । संभवता इसी कारण से टेलिविजन जैसे प्रभावी जनसंचार माध्यमों के अनेक चॅनेलो में ९५ टक्के प्रतिशत उत्पादन के विज्ञापन हिंदी भाषा में प्रसारित होते है । जो हिंदी जन सामान्य की भाषा है ।

जनसंचार का माध्यम हिंदी भाषा बनी तो हिंदी भाषा को भी प्रचारित प्रसारित इन्ही जनसंचार माध्यमों ने किया है ।

संक्षेप में कह सकते है की, जनसंचार माध्यमों से हिंदी भाषा की सीमा एवं सामर्थ्य में वृध्दी हुई है । हिंदी भाषा जनसंचार माध्यमों द्वारा जन जन की भाषा बन गयी है । आज हिंदी राष्ट्रीय जनसंचार माध्यमों तक ही नही वैश्विक जनसंचार माध्यमोद्वारा बहुत से विषयों की प्रकटीकरण की भाषा बन गयी है । संचार को अगर विकास की पहली सीढी माना गया तो हिंदी भाषा का इसमे महत्त्वपूर्ण योगदान है । भाषा और संचार माध्यम यह एक ही सिक्के के दो पहेलू हो सकते है । संक्षेप में कह सकते है की आंतरराष्ट्रीय स्तरपर हिंदी भाषा की वास्तविक शक्ती को उभारने में जनसंचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१. जनसंचार माध्यम में हिंदी की स्थिति और दिशा –
२. लेखक : डॉ. किर्तीकुमार जादव, डॉ. विनोदचंद्र चौधरी
३. विश्वबाजार में हिंदी – लेखक : महिपालसिंह, देवेंद्र मिश्र
४. जनसंचार और पत्रकारिता : विविध आयाम– लेखक : डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

Scanned with CamScanner